प्रातः क्लास 12/1/69 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। रूहानी बच्चे जानते हैं यह पुरूषोत्तम संगम युग है। अपना भविष्य का पुरूषोत्तम मुख देखते हो। पुरूषोत्तम चोला देखते हो। फील करते हो कि हम फिर नई दुनियाँ सतयुग में इनके वंशावली में जावेंगे अर्थात् सुखधाम में जावेंगे अथवा पुरूषोत्तम बनेंगे। बैठे2 यह विचार आते हैं। स्टूडेन्ट जब पढ़ते हैं जो दर्जा पढ़ते हैं वह जरूर बुद्धि में होगा ना मैं बैरीस्टर या फलाना बनूँगा। वैसे तुम भी जब यहां बैठते हो तो यह जानते हो हम विष्णु डिनायस्टी में जावेंगे। विष्णु का दो रूप है देवी–देवता। तुम्हारी बुद्धि ही अब अलौकिक है और कोई मनुष्य की बुद्धि में यह बातें रमण नहीं करती होंगी। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सभी बातें हैं। यह कोई कॉमन सतसंग नहीं है। यहाँ बैठे हो, समझते हो सत् बाबा, जिसको शिव कहा जाता है उनके संग में हम बैठे हैं। शिवबाबा ही रचयिता है, वही इस रचना के आदि–मध्य–अन्त को जानते हैं और वह नॉलेज देते हैं। जैसे कि कल की बात सुनाते हैं। आदि–मध्य और अन्त। सभी की बुद्धि में यह चलता होगा। यहां बैठे हो यह तो याद होगा ना। हम आये हैं रिज्यूविनेट होने अर्थात् यह शरीर बदल देवता शरीर लेने। आत्मा कहती है हमारा यह तमोप्रधान, पुराना शरीर है। इनको बदलकर ऐसा लेने का है। एम आबजेक्ट कितनी सहज है। पढ़ाने वाला टीचर जरूर पढ़ने वाले स्टूडेन्ट से होशियार होगा ना। पढ़ाते हैं, अच्छे कर्म सिखलाते हैं तो जरूर ऊँच होगा ना। तुम जानते हो हमको सभी से ऊँच ते ऊँच भगवान पढ़ाते हैं। हमको देवी–देवता बनाते हैं। भविष्य में हम सो देवता बनेंगे। हम जो पढ़ते हैं सो भविष्य नई दुनियां के लिये पढ़ते हैं और कोई को नई दुनियाँ का पता भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में अभी आता है यह ल0ना0 नई दुनियाँ के मालिक थे। तो जरूर फिर रिपीट होगा। तो बाप समझाते हैं तुमको पढ़ाकर मनुष्य से देवता बनाता हूँ। देवताओं में भी जरूर नम्बरवार होंगे। दैवी–राजधानी होती है ना। तुम्हारा सारा दिन यही ख्यालात चलता होगा हम आत्मा हैं। हमारी (आत्मा) जो बहुत पतित थी सो अभी पावन बनने लिये हम पावन बाप को याद करते हैं। याद का अर्थ भी समझाया है। आत्मा याद करती है अपने स्वीट बाप को। बाप खुद कहते हैं बच्चे मुझे याद करने से तुम सतोप्रधान देवता बन जावेंगे। सारा मदार याद की यात्रा पर है। बाप जरूर पूछेंगे ना बच्चे कितना समय याद करते हो? याद करने में ही माया की लड़ाई होती है। तुम खुद समझते हो यह यात्रा नहीं; परन्तु जैसे कि लड़ाई है। इसमें विघ्न बहुत पड़ते हैं। याद की यात्रा में रहने में माया विघ्न डालती है अर्थात् याद भुला देती है। कहते भी हैं बाबा हम आपको याद करते हैं; परन्तु माया के तूफान बहुत लगते हैं। नम्बरवन तूफान है देह–अभिमान का, फिर काम, क्रोध, लोभ, मोह का। बच्चे कहते हैं बाबा हम तो बहुत कोशिश करते हैं याद में रहने की, कोई विघ.... आये; परन्तु फिर भी तूफान लगते हैं। आज क्रोध का तूफान, आज लोभ का तूफान आया। बाबा आज हमारी अवस्था अच्छी रही। कोई भी तूफान नहीं आया। याद की यात्रा में हम सारा दिन रहे। बड़ी खुशी थी। बाप बहुत याद किया। आँसू भी याद में बहते रहे। बाप की याद में रहने से तुम बहुत मीठे हो जावेंगे। यह समझते हैं हम माया से हार खाते–खाते कहाँ तक आकर पहुँचे हैं। बच्चे हिसाब निकालते हैं कल्प में कितने मास, कितने दिन, कितने घंटे, कितने मिनट, कितने सेकण्ड्स होते हैं। यह दुनियाँ कितने वर्षों, कितने मासों, दिनों, कितने घंटों, कितने मिनटों, कितने सेकण्डों की बनी हुई है। बुद्धि में आता है ना। अगर कोई कहे ल(खों) वर्ष की आयु तो फिर कोई हिसाब थोड़े ही कर सकेंगे। बाप बैठ समझाते हैं यह सृष्टि का चक्र फिरता रह.... इस सारे चक्र में कितने जन्म हम लेते हैं, कैसे डिनायस्टी में जाते हैं यह तो जानते हो ना। यह बिल्कुल नई नालेज है नई दुनियाँ के लिये। नई दुनियाँ स्वर्ग को कहा जाता है। वहां देवताएँ रहते हैं। तुम कहेंगे अ..... मनुष्य हैं, देवता बन रहे हैं। देवता पद है ऊँच। अभी तुम बच्चे समझते हो हम सभी से न्यारी नालेज ले .... हमको पढ़ाने वाला न्यारा बिल्कुल विचित्र है। उनको यह साकारी चित्र नहीं है। वह है ही निराकार। तो ..... में देखो कैसा अच्छा पार्ट रखा हुआ है। बाप पढ़ावे कैसे। तो खुद बतलाते हैं मैं फलाना तन में आता हूँ।

तन में आता हूँ वह भी बताते हैं। मनुष्य मूँझते हैं क्या एक ही तन में आवेगा; परन्तु यह तो ड्रामा है ना। इसमें चेंज हो नहीं सकती। यह बातें तुम्हीं सुनते और धारण करते हो और सुनाते हो कैसे हमको शिवबाबा पढ़ाते हैं। हम फिर और आत्माओं को पढ़ाते हैं। पढ़ती आत्मा है। आत्मा ही सीखती, सिखलाती है। आत्मा मोस्ट वैल्युएबुल है। आत्मा अविनाशी अमर है। सिर्फ़ शरीर ख़त्म होता है। हम आत्माएँ अपने परमपिता परमात्मा से नालेज ले रहे हैं। रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त, 84 जन्मों की नालेज ले रहे हैं। नालेज कौन लेती है? हम आत्मा। आत्मा अविनाशी है। मोह भी रखना चाहिए अविनाशी चीज़ में न कि विनाशी चीज़ में। इतना समय तुम विनाशी चीज़ में मोह रखते आये हो। अभी समझते हो हम आत्मा हैं, शरीर का भान छोड़ना है। कोई2 बच्चे लिखते हैं मुझ आत्मा ने यह काम किया। मुझ फलाने की आत्मा ने आज बाप को बहुत याद किया। मुझ फलाने की आत्मा ने यह भाषण किया। वह है सुप्रीम–आत्मा। नालेज–फुल। तुम बच्चों को कितनी नालेज देते हैं। मूलवतन, सूक्ष्मवतन को तुम जानते हो। मनुष्यों की बुद्धि में तो कुछ भी नहीं है। तुम्हारी बुद्धि में है रचयिता कौन है। इस मनुष्य सृष्टि का क्रिएटर गाया जाता है। तो अक्षर जरूर कर्तव्य पर आते हैं। यह भी तुम समझते हो और कोई मनुष्य नहीं जिसको आत्मा और परमात्मा बाप याद हो। बाप ही यह नालेज देते हैं कि अपन को आत्मा समझो। तुम अपन को शरीर समझ उल्टी लटक पड़े हो। एक/दो को कहते भी हैं ना तुम तो उल्लू हो। फलाना हो। सन्यासी लोग भी कितने नाम रखते हैं। सर्प–सर्पणी है, उल्लू, पाजी हैं। क्योंकि 84 लाख योनियाँ कहते हैं तो उसमें सभी आ जाते हैं। जो कहते हैं वह इस समय उस क्वालिटी के हैं। ज्ञान तो कुछ भी है नहीं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। हम कोई उल्लू, पाजी, गधा नहीं बने हैं। यूँ आत्मा तो सभी चीज़ में है। कलकत्ते में एक आदमी है जिसने यह खास स्टडी की है कि झाड़ आदि सभी चीज़ में आत्मा है; परन्तु कोई में जड़ है, कोई में चैतन्य है। मनुष्य में सभी से चैतन्य है। इसलिये गायन भी है आत्मा सत्, चित, आनन्द स्वरूप है। आत्मा की सभी से जास्ती महिमा है। एक बाप की आत्मा की कितनी महिमा है। वही दुःखहर्ता, सुखकर्ता है। मच्छर आदि की तो महिमा नहीं करेंगे कि वह दुःखहर्ता सुखकर्ता है। ज्ञान का सागर है। नहीं। यह (है) बाप की महिमा। तुम खुद भी दुःखहर्ता सुखकर्ता हो हरेक के। क्योंकि उस बाप के बच्चे हो। जो सभी का दुःख हर सुख देते हैं। सो भी आधा कल्प के लिये। यह नालेज और कोई में है नहीं। नालेजफुल एक ही बाप है। हमारे में नो नालेज। एक बाप को ही नहीं जानते हैं तो बाकी फिर क्या नालेज होगी। अभी तुम फील करते (हो) हम पहले नालेजलेस थे। कुछ भी नहीं जानते थे। बेबीज थे। बेबी में नालेज नहीं होती है और कोई अवगुण (भी) नहीं होता है। इसलिये उनको महात्मा कहा जाता है। क्योंकि पवित्र हैं। जितना छोटा बच्चा उतना ही नम्बरवन फूल। बिल्कुल ही जैसे कि कर्मातीत अवस्था है। कर्म–अकर्म को कुछ भी नहीं जानते। सिर्फ़ अपन को जानते हैं। वह फूल हैं इसलिये सभी को कशिश करते हैं। जैसे अभी बाप कशिश करते हैं। बाप आये ही हैं कशिश कर तुम सभी को फूल बनाने। तुम्हारे में भी कई बहुत खराब काँटें भी हैं। 5 विकारों रूपी काँटा है ना। (इ)स समय तुमको फूलों और काँटों का ज्ञान है। कोई कोई के चलन जैसे काँटे मिसल है। भूं भूं करते रहते हैं। .....ध का काँटा है। काँटों का जंगल भी होता है ना। बबूल का काँटा सबसे बड़ा होता है। उन काँटों से भी बहुत चीज़ें बनती हैं। छोटेपन में हम एट बनाते थे तो इन काँटों से बैठ बनाते थे और कोई झाड़ में इतने ..... काँटें नहीं होते हैं। भेंट की जाती है मनुष्यों की। बाप समझाते हैं इस समय बहुत दुःख देने वाले मनुष्य (बै)ठे हैं। इसलिये इसको दुःख की दुनियाँ कहा जाता है। कहते भी हैं बाप सुखदाता है। माया रावण दुःखदाता ..... फिर सतयुग में माया ही नहीं होगी। तो यह कुछ भी बातें नहीं होंगी। ड्रामा में एक पार्ट दो वारी हो नहीं सकता। बुद्धि में है सारी दुनियाँ में जो भी पार्ट बजता है वह सभी नया। तुम विचार करो सतयुग से लेकर .... तक दिन ही बदल जाते, एक्टविटी ही बदल जाती। 5000 वर्ष की पूरी एक्टिविटी का रिकॉर्ड आत्मा में नुँधा हुआ है। वह बदल नहीं सकता। हर आत्मा में अपना पार्ट भरा हुआ है। यह एक बात भी कोई समझ

नहीं सकते। आत्मा अविनाशी है उनमें 84 का पार्ट है सतयुग से लेकर अभी तक। पास्ट, प्रेजेन्ट, फ्युचर। आदि–मध्य–अन्त को तुम जानते हो। यह स्कूल है ना। सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त को जानना है और फिर बाप को याद कर पवित्र बनने की पढ़ाई है। इनके पहले जानते थे क्या हमको यह बनना है। बाप कितना क्लीयर कर समझाते हैं। तुम पहले नम्बर में यह थे। फिर तुम नीचे उतरते–2 अभी क्या बन गये हो। दुनियाँ को तो देखो क्या बन गई है। कितने ढेर मनुष्य हैं। इनकी राजधानी का विचार करो क्या होगा। यह जहाँ रहते होंगे कैसे हीरे जवाहरों आदि के महल होंगे। बुद्धि में आता है अभी हम स्वर्गवासी बन रहे हैं। वहाँ हम अपने ऐसे मकान आदि बनावेंगे। ऐसे नहीं नीचे से कोई द्वारिका निकल आवेगी। जैसे शास्त्रों में दिखाया है। शास्त्र नाम चला ही आता है। और कोई नाम तुम रख नहीं सकते हैं। और किताब होते हैं पढ़ाई की। और दूसरे नावेल्स होते हैं। बाकी इनको पुस्तक अथवा शास्त्र कहते हैं। वह है पढ़ाई की किताब। भक्तिमार्ग के पुस्तक अलग हैं। जिससे मनुष्य नीचे ही गिरते हैं। शास्त्र पढ़ने वालों को, भक्ति करने वाले को भक्त आदमी कहा जाता है। भक्ति और ज्ञान है ना। अभी वैराग्य किसका ? भक्ति का या ज्ञान का? जरूर कहेंगे भक्ति का। अभी तुमको ज्ञान मिल रहा है जिससे तुम इतना ऊँच पद पाते हो। भक्ति से तुम कितने नीच बन पड़े हो। मनुष्य जानते हैं भक्ति के पीछे फिर है ज्ञान। भक्ति का वैराग्य करना है। भक्ति को दुर्गति कहा जाता है। ज्ञान सद्गति देने वाला है। बाप इशारा देते हैं भक्ति माना ही दुर्गति। ज्ञान माना ही सद्गति। तुम जानते हो भक्तिमार्ग में बहुत ही दुःखी रहे हैं। अभी बाप हमको सुखदाई बनाते हैं। सुखधाम को ही स्वर्ग कहा जाता है। सुखधाम में चलने वाले हो तो तुमको ही पढ़ाते हैं। यह ज्ञान भी तुम्हारी आत्मा लेती है। आत्मा का कोई धर्म नहीं होता। वह तो आत्मा आत्मा ही है, फिर जब आत्मा शरीर में आती है तो शरीर के धर्म अलग2 होते हैं। आत्मा का धर्म क्या है? एक तो आत्मा बिन्दी मिसल है और शान्त–स्वरूप है। शान्तिधाम–मुक्तिधाम में रहती है। अभी बाप समझाते हैं सभी बच्चों का हक़ है। बहुत बच्चे हैं जो और और धर्म में कन्वर्ट हो गये हैं। वह फिर निकल कर अपने असल धर्म में आ जावेंगे। जो देवी–देवता धर्म छोड़ दूसरे धर्म में गये हैं, वह सभी पत्ते लौट आ जावेंगे अपने जगह पर। जो हिन्दू से मुसलमान बनते हैं उनको शेख कहते हैं। शेख मुहम्मद। बदलकर आया है। इन सभी बातों से और कोई समझ न सकेंगे। पहले2 तो बाप का परिचय देना है। इनमें ही सभी मूँझ पड़े हैं। तुम बच्चे जानते हो अभी हमको कौन पढ़ाते हैं? बाप। कृष्ण तो देहधारी है। इनको दादा कहेंगे। सभी भाई2 हैं ना। फिर है मर्तबे के ऊपर। भाई का शरीर कैसा है। बहन का शरीर कैसा है। यह भी अभी तुम जानते हो। आत्मा तो एक छोटा सितारा है। इतनी सभी नालेज छोटी सितारे में है। सितारा शरीर के बिगर बात भी नहीं कर सकता। सितारे को पार्ट बजाने लिये सभी अंग भी चाहिए। सितारों की दुनियाँ की अलग है। फिर यहां आकर आत्मा शरीर धारण करती है। वह है आत्माओं का घर। आत्मा छोटी बिन्दी है। शरीर बड़ी चीज़ है। तो उनको कितना याद करते हैं। अभी तुमको याद करना है एक परमपिता परमात्मा को। यही समय है जबकि आत्मा और परमात्मा का मेला होता है। गायन भी है आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुत काल..... हम बाबा से अलग हुये हैं ना। याद आता है कितना समय अलग हुये हैं। बाप जो कल्प2 सुनाते आये हैं वही सुनाते हैं। इसमें ज़रा भी फर्क भी नहीं पड़ सकता। सेकण्ड सेकण्ड जो एक्ट चलती है वह नई। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। एक एक सेकण्ड पास होता है उनको जैसे छोड़ते जाते हैं। पास होता जाता है। ताकि कहेंगे इतने वर्ष, इतने दिन, इतने मिनट, इतने सेकण्ड पास कर आये हैं। पूरा 5000 वर्ष होगा। फिर वन नम्बर से शुरू होगा। एक्युरेट हिसाब है ना। इतने मिनट, इतने सेकण्ड भी नोट करते हो। अभी तुमसे कोई पूछे, इसने कब जन्म लिया था? तुम गिनती कर बताते हो। कृष्ण ही पहले नम्बर में जन्म लिया है। शिव का तो कुछ भी मिनट, सेकण्ड नहीं निकाल सकते हो। कृष्ण की तिथि–तारीख, मिनिट, सेकण्ड निकाल सकते हो। पूरा लिखा हुआ भी होगा। मनुष्यों की घड़ी में फर्क पड़ सकता है मिनट–सेकण्ड, शिवबाबा के अवतरण में तो बिल्कुल फर्क नहीं पड़ सकता। पता भी नहीं पड़ता है कि कब आया। ऐसे भी

नहीं साक्षात्कार हुआ तब आया। नहीं। अन्दाज कर सकते हैं। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि उस समय प्रवेश किया। साक्षात्कार तो हुआ कि हम फलाना बनेंगे। दुनियाँ को आग लगेगी। मिनट, सेकण्ड का हिसाब नहीं बता सकते हैं। उनका तो अवतरण भी अलौकिक है। वह आते ही हैं बेहद की रात के समय। बाकी और जो भी अवतरण आदि होते हैं, उनका पता पड़ता है। आत्मा शरीर में प्रवेश करती है, छोटा चोला पहनती है फिर आहिस्ते2 बड़ा होता है। तो यह सभी बातें जो बाप सुनाते हैं इनकी बुद्धि में चिंतन चलता है। विचार–सागर–मंथन होता है। कितने ढेर मनुष्य हैं। एक न मिले दूसरे से। 500 करोड़ एक्टर्स हैं। यह इतना बड़ा मान्डवा वा जैसे कि यह एक बेहद का हाल है। वह छोटे2 हाल हैं। यह है बेहद का हाल। इसमें बेहद का बाप आकर बेहद के नाटक का राज़ समझाते हैं। अभी तुम बेहद के बाप द्वारा बेहद की नॉलेज को जान गये हो। बाप भी यही पूछते हैं बाप को और बाप के रचना को जानते हो? सिवाय तुम्हारे और कोई बता न सके। तुम सुना सकते हो। तुम्हारे में भी कोई तो भूल जाते हैं। सभी का पार्ट अपना है। सारा मदार याद पर है। उस पढ़ाई में भी नम्बरवार होते हैं तब तो मर्तबे का फर्क होता है ना। कोई बैरीस्टर 2/3 सौ कमाते हैं। कोई बैरीस्टर तो इतना कमाते हैं जो फिर भी काउन्सल का मेम्बर बनते हैं। पढ़ाई से कितनी उन्नति को पाते हैं। यह तो है अविनाशी नालेज और यह एक ही पढ़ाई है; परन्तु मर्तबे का फर्क देखो कितना है। रात दिन का फर्क है। रात में है रावण का राज्य, दिन में राम का राज्य। पढ़ाई में भी बहुत फर्क है। आजकल तो देखो मेहतर भी पढ़कर एम0एल0ए0, एम0पी0 आदि बन जाते हैं। आत्मा की पढ़ाई पर इतना मदार है। आत्मा ही पढ़ती है ना। मनुष्य समझते हैं हमने पढ़ा। बाप समझाते हैं आत्मा पढ़ती है। आत्मा न हो तो पढ़ाई कैसे हो। यह है आत्मा का ज्ञान। आत्मा को कोई भी मनुष्य रियेलाइज नहीं कर सकते हैं। बाप आत्मा का भी, अपना भी रियेलाइज़ कराते हैं। बच्चों को बाप कितना समझाते हैं। हूबहू कल्प पहले मिसल समझाते रहते हैं। कैसे हम आत्माएँ 84 जन्म लेती हैं। कितना पार्ट है। इनको कहा जाता है होलसेल। रीटेल को जानना तो मुश्किल है। रीटेल का पार्ट बजावे तो इतने जन्म चाहिए। बाप अपना और सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का नालेज देते हैं। जो एक ही बाप जानते हैं। एक सुप्रीम आत्मा का कितना ऊँच ते ऊँच पार्ट है। मनुष्य सभी जो पार्ट बजाते2 नीचे उतरते एकदम नीच बन जाते हैं। उनको फिर ऊँच बनाने वाला बाप ही है। यह ड्रामा बना हुआ है। बाप जो बीजरूप है वही बैठ समझाते हैं। बाप बेहद का टीचर है। बच्चों को भी बेहद का टीचर बनाते हैं। बेहद का न बनने कारण इतना फर्क पड़ता है पास और नापास होने का। विचार करो कितने मनुष्य हैं। उन सभी को पहले से ही पार्ट मिला हुआ है। आगे चल बहुत इस नालेज को सुनेंगे। बाप को जान गये तो बाप द्वारा सभी कुछ जान जावेंगे। जैसे तुम जान गये हो तो दूसरे भी जानेंगे। अभी सभी की बुद्धि पर ताला लगा हुआ है। तो बुद्धिहीन बन गये हैं, फिर बाप द्वारा बुद्धिवान बनते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है।

बाप कहते हैं जीते रहो बच्चे कहीं माया मार न डाले। माया मार नहीं डालती है। अपवित्र बना देती है। जो अपवित्र हैं उनको ही बाप आकर पवित्र बनाते हैं। उनको फिर माया बिल्कुल ही अपवित्र बना देती है। बिल्कुल हाफ कर देती है। आधा को तो माया जरूर खाती है। बाप ने कहा है माया भी समर्थ है। तुम बच्चे भी फील करते हो। माया कोई सर्वशक्तिवान नहीं है। माया को सर्वशक्तिवान नहीं कहेंगे। हाँ, कहेंगे माया बड़ी दुस्तर है। बच्चे यह भी फील करते हैं माया बहुत दुःख देती है। बाप सुख देते हैं। तो सुख और दुःख की हिस्ट्री जाग्राफी तुम बच्चे ही जानते हो। सो भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार जानते हैं। कोई ..... 99% पावन बनते हैं। 100% नहीं कहेंगे; क्योंकि 100% है ही बाप के लिये जो सदैव पावन ही है। माया बहुतों को गिराती है। यह तुम बच्चों को तो मालूम नहीं है। बाप दादा को मालूम है। कितनी मेहनत ..... तो कितना टाइम लगता है पावन बनने में। गाया जाता है सेकण्ड में निश्चय बुद्धि। तो सेकण्ड में ही फिर माया क्या से क्या क्या बना देती है। इसलिये बाप कहते हैं बच्चे खबरदार रहो। बच्चों को अपने ऊपर खबरदारी रखनी है। अच्छा गुडमॉर्निंग।